क्रिया एवं समानार्थक शब्द

(वाक्यपदीय के विशेष सन्दर्भ मे)

अमरजी झा

सामान्यतः क्रिया के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे– आख्यात, भाव, क्रिया, धातु, व्यापार, भावना, Verb, Action, Root आदि। इन शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म अन्तर होते हुए भी ये सभी स्थूलतः क्रिया के अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं। अतः सर्वप्रथम इन शब्दों का सामान्य परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है।

आख्यात

वैदिक काल से ही आख्यात का प्रयोग क्रिया के वाचक के रूप में किया जाता है।[247] सोम को आख्यात का देवता तथा भारद्वाज को ऋषि कहा गया है।[248] गोपथ ब्राह्मण में भी आख्यात का उल्लेख मिलता है।[249] ऋग्वेद प्रातिशाख्य में भी धातु सहित भाव को आख्यात कहा गया है। इसमें आख्यात और धातु को समानार्थक माना गया है।[250]

लघु न्यासकार ने क्रिया–प्रधानत्त्व के रूप में आख्यात को परिभाषित किया है।[251] यास्क से पूर्ववर्ती आचार्यों ने इसे धातु एवं धातुज दोनों रूपों में व्यक्त किया है, उदाहरणस्वरूप– शाकटायन ने नाम को आख्यातज कहा है। यहाँ आख्यात से अभिप्राय धातु से है, महाभाष्यकार ने भी इसका उल्लेख किया है। जिसमें आख्यात के पर्याय के रूप में धातु का प्रयोग हुआ है।[252] परन्तु यास्क ने इसे सिद्ध क्रिया के रूप में प्रयोग किया है।

---

247 क्रियावाचकं आख्यातम्, वा०प्राति० भाग I, सं० पृ० 5.1

248 भारद्वाजकमाख्यातं भार्गवं नाम भाष्यते।
वशिष्ठ उपसर्गस्तु निपातः काश्यपः स्मृतः।। वा०प्रति० उव्वट भाष्य, 8.52, सं० पृ० 52

249 ओंकारं पृच्छामः, को धातुः किं प्रातिपदिकम्, किं नामाख्यातम् किं लिङ्गम्, किं वचनम्, का विभक्तिः, कः प्रत्ययः, कः स्वरः, उपसर्गो निपातः ..... गोपथ ब्राह्मण, प्र० 1.24

250 तन्नाम येनाभिदधाति सत्त्वं, तदाख्यातं येन भावं स धातु ऋक्० प्रातिशाख्य (शौनक) 12, संस्कृत साहित्य परिषद, संस्करण कलकत्ता, पृ० 5

251 आख्यायते अनेन क्रिया प्रधानत्वे साध्यर्थाभिधायितया वेत्याख्यातम् तच्च त्याद्यन्तम इति।

252 (क) तत्र नामानि आख्यातजानीति शाकटायनस्य.....।
सर्वाण्याख्यातजानि नामानि निरुक्त। 1.2
त्रिभ्यः आख्यातेभ्यो जायत इति शाकपूणिः।
(ख) नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्। महा० III.I.

तत्पश्चात् गणसूत्र में भी इससे निष्पन्न क्रिया का ही अर्थ लिया गया है।[253] बाणभट्ट ने कादम्बरी में एक ही स्थल पर आख्यात एवं क्रिया का प्रयोग किया है।[254]

निरुक्तकार ने भाव प्रधान को आख्यात कहा है जिसमें पौर्वापर्य होता है।[255] वाक्यपदीय प्रथम काण्ड की कारिका 1.26 पर टीका करते हुए वृषभदेव ने काशकृत्स्न द्वारा प्रदत्त आख्यात की परिभाषा को उद्धृत किया है।[256]

इस प्रकार यास्क से पूर्व आख्यात का धातु, या शब्द के मूल के रूप में प्रयोग होता था, पर बाद में यह सिद्ध पद के रूप में प्रयोग होने लगा। पाणिनि के पूर्ववर्ती आचार्यों ने आख्यात शब्द का प्रयोग पारिभाषिक पद के रूप में किया है। परन्तु पाणिनि इससे भिन्न दो सूत्रों में आख्यात शब्द का प्रयोग पारिभाषिक रूप में नहीं करते।[257]

कात्यायन ने आख्यात शब्द का पारिभाषिक रूप में ही कथन किया है।[258] चन्द्रकीर्ति के अनुसार 'आख्यात' से भू आदि का रूप जिससे व्यक्त होता है अथवा यह साध्यार्थ को व्यक्त करने के रूप में होता है।[259]

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी आख्यात को क्रियावाचक कहा गया है।[260] मीमांसा शास्त्र में भी आख्यात को इसी रूप में कहा गया है।[261] आचार्य भर्तृहरि ने स्पष्टतः ब्रह्मकाण्ड में ही स्वोपज्ञवृत्ति में आख्यात को क्रिया का वाचक माना है।[262]

---

253 आख्यातम् आख्याते क्रिया सातत्ये।

254 व्याकरणेमिव प्रथममध्यमोत्तमपुरुष विभक्तिस्थितानेकादेशकारकाख्यात सम्प्रदानक्रियाव्यय-प्रपञ्च- सुस्थितम्।

255 भावप्रधानमाख्यातम्.... पूर्वापरीभूतं भावमाख्यातेनाचष्टे। निरुक्त० 1.9.11 सं०

256 धातु साधने दिशि पुरुषे चिततदाख्यातम्। वाक्यपदीय, 1.26 पद्धति, पृ० 74

257 (क) आख्यातोपयोगे, पा० 1.4.29
(ख) द्वयजृहब्राह्मणर्क प्रथमाध्वरपुरश्यणनामाताट्ढक, पा० 4.3.72

258 आख्यातं साव्ययकारकविशेषणम् वाक्यम्। पा०सू० पर वार्तिक

259 आख्यायन्ते कथ्यन्ते अर्थात् निष्पाद्यन्ते भ्वादीनां रूपाणि येन तदारख्यातम्। अथवा आख्यान्ति आचक्षते कर्तुव्यापामित्याख्याताः।
Chatterji, Kshitish Chandra, Technical Terms and Technique of Sanskrit Grammer, द्वितीय संस्करण, कलकत्ता, 1964

260 आविष्टं लिङ्ग आख्यातं क्रियावाचि। अर्थशास्त्र, 2/10/28

261 येषां तूत्पत्तावर्थे स्वे प्रयोगो न विद्यते तान्याख्यातानि। मीमांसासूत्रम् 2.1.4

262 अथवा प्रवृत्तिर्जन्मादिक्रिया आख्यातपदनिबन्धना। वाक्य० 1.13 पर वृत्ति, अय्यर, के०ए०एस०, पूना, 1966, पृ० 13

आख्यात शब्द आ-उपसर्गपूर्वक ख्या प्रकथने धातु से क्त प्रत्यय होकर निष्पन्न हुआ है। इसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ **आख्यायतेऽनेन इति आख्यातम्** अर्थात् कहा हुआ। आप्टे ने भी धात्वर्थ द्वारा विशिष्ट के विधेयक में समर्थ शब्द को आख्यात कहा है।[263] इस प्रकार आख्यात मुख्यतः क्रियावाचक पद है।

क्रिया

'क्रिया' शब्द 'कृ' धातु से कृदन्तीय 'श' प्रत्यय (कृ+श, रिङ ओ, इयङ् आदेश) होकर निष्पन्न है।[264] इसका अर्थ है करना, कार्यान्विति, कार्यसंपादन आदि।[265] इस शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है 'करोतीति क्रिया' अर्थात् कर्त्ता जो कुछ करता है, वह सब क्रिया है। अथवा "क्रियतेऽवयवानां क्रमेण उत्पत्त्या इति क्रिया"[266] अर्थात् अवयवों या अवान्तर व्यापारों के क्रम से उत्पादित किए जाने से वह क्रिया कहलाती है। पाणिनि ने दो सूत्रों में 'क्रिया' पद का प्रयोग किया है जिसमें क्रिया को हेतु लक्षण बताया है।[267]

भाष्यकार ने क्रिया का वाचक धातु को माना है।[268] इनके अनुसार क्रिया के शब्दस्वरूप को ईहा, चेष्टा व व्यापार भी कहा जाता है।[269] तथा यह द्रव्य से भिन्न इङ्गित (अभिप्राय को सूचित करने वाला शरीर व्यापार), चेष्टित (कार्य परिस्पन्द) और निमिषित (अक्षि व्यापार) मानते हैं।[270] पाणिनि ने भाव और क्रिया को अनेक सूत्रों में समानार्थक रूप में प्रयोग किया है।[271]

कैयट ने महाभाष्य या प्रदीप टीका में भाव और क्रिया के बीच अन्तर किया है। उनके अनुसार स्पन्दनरहित साधन धात्वर्थ भाव है तथा जिसमें स्पन्दन सहित साधन-साध्य हो वह क्रिया है।[272]

---

263 धात्वर्थेन विशिष्टस्य विधेयत्वेन बोधने समर्थः, स्वार्थयन्नस्य शब्दों वाख्यातमुच्यते। आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत-हिन्दी कोष, पृ० 139

264 कृञः श च, अष्टा० 3.3.100

265 आप्टे वामन, शिवराम, पृ० 311

266 शास्त्री, भीमसेन, वै०भू०सा० धात्वर्थनिर्णय, पृ० 19 टिप्पणी में उद्धृत

267 उपसर्गाः क्रियायोगे। पा० 1.4.50
लक्षण हेत्वोः क्रियायाः। पा० 3.3.15

268 म०भा०पा० 1.3.1 पर टीका

269 का पुनः क्रिया? ईहा। का पुनरीहा? चेष्टा। का पुनश्चेष्टा? व्यापारः म०भा० 1.3.1

270 यत्तर्हि तदिङ्गितं चेष्टितं निमिषितम् स शब्दः? नेत्या क्रिया नाम सा।
म०भा० 1.1.1, पश्पशा०, पृ० 10

271 (क) पाणिनि सूत्र सं० 1.2.21
(ख) पा० I.3.13, पा० III.1.66

272 अपरिस्पन्दनसाधनसाध्यो धात्वर्थो भावः। सपरिस्पन्दनसाधनसाध्यस्तु क्रिया
म०भा० 3.1.87 पर प्रदीप टीका

दार्शनिक रूप से क्रिया को क्रम से युक्त द्रव्य कहा जाता है।[273] आचार्य भर्तृहरि ने भी आश्रित क्रम रूपत्वात् कहा है।[274]

धातु

'धातु' पद √धा + तुन प्रत्यय होकर धारण अर्थ में निष्पन्न है, जिसका अर्थ संघटक, मूल तत्व या अवयव होता है।[275] धातु शब्द का प्रथमतः प्रयोग गोपथ ब्राह्मण में हुआ है।[276] निरुक्त में √धा धातु से व्युत्पन्न बताया गया है।[277] पाणिनि ने भू आदि की धातु संज्ञा की है तो कात्यायन ने क्रियाभावो धातुः कहा है। 'धातु' को विभिन्न आचार्यों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है।[278]

जिसमें एधादि, सनन्तादि, क्रियार्थ आदि रूप में धातु को परिभाषित किया गया है। धातु के दो भेद प्राथमिक तथा द्वितीयक धातु किये गये हैं। द्वितीयक में धातुजा धातवः एवं नाम धातवः होता है।[279] इस प्रकार धातु क्रिया पद का मूल अवयव होता है।[280]

भाव

भाव शब्द भू धातु घञ् प्रत्यय से निष्पन्न है। जिसका अभिप्राय होना, सत्ता, अस्तित्व है।[281] ऋग्वेद प्रातिशाख्य में भाव को सधातु कहा गया हैं। निरुक्तकार ने आख्यात के मूल में भाव का होना

---

273 Philosphically क्रिया is defined as सत्ता Appearing in temporal sequence in Various Things
अभ्यंकर एवं शुक्ल, ए डिक्शनरी ऑफ संस्कृत ग्रामर, बड़ौदा, 1966, पृ० 133

274 आश्रितक्रमरूपत्वात् तत् क्रियेत्वभिधीयते।
वाक्य० 3.8.1 का उत्तरार्द्ध, रघुनार्थ शर्मा, सं०स०वि०, वाराणसी, 1979

275 Dhatu (from Dha 'To lay' put) originally meant layer, constituent part, then it meant element, primitive matter. Chatterji, Kshitish Chandra, Calcutta, p. 83

276 ओंकारं पृच्छामः को धातुः। गो०ब्रा०, प्र० 1.24

277 एतावन्तः समानकर्मणो धातवः धातुरदधाते। निरुक्त, 1.20

278 भूवादयो धातवः। अष्टा० 1.3.1
पा० 3.1.9 पर कात्यायन

279 (क) क्रियावचनो धातु। म०भा० 1.3.1
(ख) भूवादयो धुः, जैनेन्द्र, 3.1.9
(ग) क्रियार्थो धातुः,
(घ) समाद्यन्ता धातवः,
(ङ) भू सनन्ताद्या धातवः, 1.3.63
Chatterji, Kshitish Chandra, Technical Terms and Technique of Sanskrit Gramer, p. 86

280 अभ्यंकर एवं शुक्ल, ए डिक्शनरी ऑफ संस्कृत ग्रामर, बड़ौदा, पृ० 207

281 भावगर्हायाम् धात्वर्थगर्हायाम्, काशिका, पा० 3, 1.24 पर, भाव क्रिया, आप्टे, वामन शिवराम, पृ० 737

बताया है। यह पौर्वापर्य क्रम के कारण छः अवस्थाएँ होती हैं।[282] पाणिनि के सूत्र 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' पर काशिकाकार ने भाव को ही क्रिया कहा है। काशिकाकार ने स्पष्टतः इसे धात्वर्थ माना है, जो घञादि प्रत्यय से निष्पन्न होता है। अर्थात् यह निष्पन्नावस्था का बोधक है।[283]

महाभाष्यकार ने भी कृदन्त भाव को द्रव्य माना है जो कि एक पूर्ण क्रिया कहलाती है।[284] महाभाष्यकार एवं काशिकाकार ने भाव शब्द का एक अर्थ प्रवृत्ति या निमित्त किया है।[285]

ऋग्वेद प्रातिशाख्य में भाव शब्द का प्रयोग प्रतिस्थापन के अर्थ में हुआ है।[286] गीता में भी इसका प्रयोग अस्तित्व, सत्ता अर्थ में हुआ है।[287] अभ्यंकर एवं शुक्ल ने भी इसका अर्थ धात्वर्थ ही किया है जो किसी प्रक्रिया के घटित होने का बोधक है।[288] धातुरत्नाकर में कहा गया है कि षड्भाव विकार में 'भाव' सत्ता सामान्य रूप क्रिया है।[289] कैयट ने क्रिया, सत्ता दोनों अर्थों में भाव का अर्थ किया है।[290] मीमांसादर्शन में भाववाचक कर्म शब्दों से क्रिया की प्रतीति मानी गयी है।[291]

भावना

अभ्यंकर एवं शुक्ल ने भावनाशब्द का अर्थ प्रयास, प्रयत्न किया गया है।[292] भर्तृहरि ने भी वाक्यपदीय में भावना का अर्थ क्रिया रूप में किया है।[293] वैयाकरण भूषणसार में भी भावना को

---

282 षड्भावविकाराः भवन्ति। निरुक्त 1.36
पूर्वापरीभूतं भावमाख्यातेनाचष्टे व्रजतिपचतीत्युपक्रमप्रभृति अपवर्गपर्यन्तम्। निरुक्त 1.1.2

283 धात्वर्थश्च धातुनैवोच्यते। यस्यतस्य सिद्धता नाम धर्मस्तस्य घञादयः प्रत्यया विधीयन्ते। काशिका, पा० 3.3. 18 भावे सूत्र पर

284 कृदभिहितो भावो द्रव्यवद्भवति। भा०पा०श० II, 2.19 पर

285 (क) सिद्धशब्दे: कूटस्थेषु भावेष्वविचालिषु वर्त्तते। म०भा० 1.1
(ख) भवतोस्मादभिधानप्रत्ययौ इति भावः। शब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तं भावशब्देनोच्यते। अश्वत्म, अश्वता काशिका, पा०सू० 5.1.119 पर

286 तत्र प्रथमास्तृतीयाभावम्। ऋ०प्रा० II.4

287 नासतो विद्यते भावः .....। भगवद्गीता 2.16

288 The word is used many times in the sense of धात्वर्थ the sense of a root which is complete activity of process of evolving, अभ्यंकर एवं शुक्ल, ए डिक्शनरी ऑफ संस्कृत ग्रामर, बड़ौदा, 1986

289 षड्भावविकारा इति वचनाच्च भावः सत्ता सामान्यरूपा क्रियेत्यवधीयते। धातुरत्नाकार, पृ० 6

290 भावस्य क्रियायाः षट् प्रकारा इत्यर्थः अथवा भावस्य सत्ताया एते प्रकाराः।

291 भावार्थाः कर्मशब्दास्तेभ्यः क्रिया प्रतीयतैष ह्यर्थो विधीयते। मी०सू० 2.1.1

292 Efforts, activity it also has the sense of thought or reflection.
अभ्यंकर एवं शुक्ल, ए डिक्शनरी ऑफ संस्कृत ग्रामर, पृ० 292

293 वा०प० 2.116

आख्यातवाच्य माना गया है परन्तु धात्वर्थ नहीं माना है।[294] मीमांसकों ने व्यापार को भावना कहा है। कुमारिल ने वाक्याधिकरण में इसका विशद् विवेचन किया है।[295]

ईहा

ईह धातु से निष्पन्न ईहा का अर्थ कामना, इच्छा, प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा आदि है।[296] ऋग्वेद प्रातिशाख्य में भी इसका अर्थ चेष्टा किया गया है।[297]

चेष्टा

चेष्टा शब्द चेष्ट धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ चाल, गति, संकेत, प्रयास, प्रयत्न आदि होता है।[298] इच्छा से चेष्टा उत्पन्न होती है। गीता में भी कहा गया है कि ज्ञानीजन की प्रकृत्यानुरूप चेष्टा करते हैं।[299] छान्दोग्योपनिषद् में भी कहा गया है कि परमतत्त्व के एक से अनेक होने की इच्छा से सृष्टि हुई है।[300]

व्यापार

व्यापार शब्द का कोशगत अर्थ नियोजन, संलग्नता, व्यवसाय, कर्म, क्रिया आदि है।[301] कौण्डभट्ट ने भावना, व्यापार, उत्पादना को क्रिया का पर्याय माना है।[302] शब्दकौस्तुभ में व्यापाररूप भावना को ही क्रिया कहा गया है।[303] पंतजलि ने ईहा, चेष्टा, व्यापार का कथन पर्याय रूप में किया है।

Root

फ्रांसिस कटाम्बा ने इसकी परिभाषा दी है कि यह शब्द का मूल भाग है जिसमें कुछ भी (प्रत्यय, उपसर्ग आदि) जुड़ा नहीं रहता है तथा यह सभी प्रकार के लेक्जिम में किसी न किसी

---

294 आख्यातवाच्यैव सा भावना, न धातोः। प्राधान्येनप्रतीयमानस्य..... न्यायविरूद्धत्वाच्च वै०भू०सा०, का० 7 की व्याख्या

295 श्लोकवार्तिकम्, 24.8.253, पृ० 645-646

296 आप्टे, वी०एस०, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 190

297 ईहायाम् चेष्टायाम्। ऋ०प्रा० 13

298 आप्टे, वी०एस०, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 387

299 सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि। गीता 3.3.3

300 तदैक्षत एकोऽहं बहुस्याम..... सृजत। छा०उ० 6.2.3

301 आप्टे, वी०एस०, पृ० 990

302 व्यापारो भावना सैवोत्पादना सैव च क्रिया। वै०भू०सा०, का० 5

303 का पुनः क्रिया? उच्यते करोत्यर्थभूता उत्पादनापरपर्याया उत्पत्त्यनुकूल व्यापाररूपा भावनैव क्रिया। श०कौ० 1.3.1, पृ० 51

रूपान्तरण के साथ वर्तमान है।[304] उदा०– Walk (वाक) यह Root है जो विभिन्न प्रकार के Lexeme – जैसे Walk, Walks, Walking and Walked में विद्यमान है। भाषाशास्त्र में Root को ही Free Morpheme कहा जाता है।

उदा०– Walk (वाक) यह Root है जो विभिन्न प्रकार के Lexeme – जैसे Walk, Walks, Walking and Walked में विद्यमान है। भाषाशास्त्र में Root को ही Free Morpheme कहा जाता है।

304 A root is the irreducible core of a word, with absolutely nothing else attached to it. It is the part that is always present, possibily with some modification, in the various manifestations of a lexeme. Katamba, Francis, Morphology

प्राथमिक स्रोत

· **अथर्ववेद** – सम्पा० विश्वबन्धु, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 1963

· **अर्थशास्त्र** – कौटिल्य, सं० वाचस्पति गैरोला, चौ०वि०भ०, वाराणसी, 1977

· **अष्टाध्यायी** – सं० शंकरदेव पाठक, वृन्दावन गुरूकुल विश्वविद्यालय, संवत् 1996

· **अष्टाध्यायी** – खिलपाठसहित, पाणिनि, सं० श्री चन्द्रबसु, मो०ब०दा०, दिल्ली, 1962

· **ऋक्प्रातिशाख्य** – उव्वटमहीधरभाष्य सहित, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी

· **गोपथ ब्राह्मण** – सम्पा० राजेन्द्रलाल मित्रा, इण्डोलॉजिकल बुक हाउस, दिल्ली

· **छान्दोग्य उपनिषद्** – कैलाश आश्रम, शताब्दी समारोह, महासमिति, ऋषिकेश

· **धातुरत्नाकार** – मुनि श्री लावण्य विजय, विजय नेमिसूरिग्रन्थमाला (ग्रन्थरत्न) राजनगर (अहमदाबाद) संवत्, 1983

· **निरुक्त** – यास्क दुर्गाचार्य ऋज्वर्था व्याख्या, श्री वेङ्कटेश्वर (स्टीम) मुद्रणालय, संवत् 1982

· **महाभाष्य (खंड 1 एवं 2)** – (प्रदीप एवं उद्योत सहित) मो०ब०दा०, दिल्ली, 1967

· **महाभाष्य** – सं० भार्गव शास्त्री, भाग 1 से 6, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली,

· **वाक्यपदीयम् भर्तृहरि** – हरिवृषभकृतस्वोपज्ञवृत्ति व रघुनाथशर्मा कृत **(ब्रह्मकाण्डम्)** अम्बाकर्त्री व्याख्यायुक्त, स०स० वि०वि० वाराणसी, 1963

· **वाक्यपदीयम् (भर्तृहरि)** – द्वितीय भाग पुण्यराज टीका एवं रघुनाथ शर्मा कृत अम्बाकर्त्री व्याख्या सहित, वाराणसी, संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, 1968